

शहरी जीवन-क्षमता पर पुनर्विचार: जलवायु-सहनीय शहर क्यों पुराने वैश्विक सूचकांकों की जगह लें

यूपीएससी प्रासंगिकता: सामान्य अध्ययन पेपर-3
(GS Paper-3) आपदा प्रबंधन

खबरों में क्यों?

श्रीलंका, इंडोनेशिया, थाईलैंड और फिलीपींस सहित कई एशियाई देशों में हाल ही में आई विनाशकारी बाढ़ ने वैश्विक जीवन-क्षमता (Liveability) और समृद्धि सूचकांकों की प्रमुख खामियों को उजागर किया है। उच्च रैंकिंग के बावजूद, अनेक एशियाई शहर चरम वर्षा (Extreme Rainfall) के दौरान विफल रहे, जो आधुनिक शहरी छवि और वास्तविक जलवायु सहनशीलता (Climate Resilience) के बीच बढ़ते अंतर को दर्शाता है।



पृष्ठभूमि

मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई जैसे शहरों को उनके आर्थिक उत्पादन, संस्कृति, और बुनियादी ढांचे के आधार पर "वैश्विक मेट्रो" के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र-पर्यावास शहर समृद्धि सूचकांक (UN-Habitat City Prosperity Index), ग्लोबल लाइफ-क्षमता सूचकांक और सिटी रेज़िलिएंस इंडेक्स जैसे वैश्विक ढाँचे शहरों का मूल्यांकन स्वास्थ्य, शिक्षा, कनेक्टिविटी और शासन के आधार पर करते हैं।

हालाँकि, ये मापदंड आज के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न का समाधान करने में विफल रहे हैं: क्या कोई शहर अपने निवासियों को जलवायु चरम सीमाओं से बचा सकता है? हाल की एशियाई बाढ़ से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान मापदंड अस्तित्व की अनिवार्यताओं को नज़रअंदाज़ करते हैं। 9235440806

एशियाई बाढ़: प्रमुख खुलासे

जलवायु घटनाएँ रैंकिंग और जमीनी तैयारी के बीच बेमेल को उजागर करती हैं:

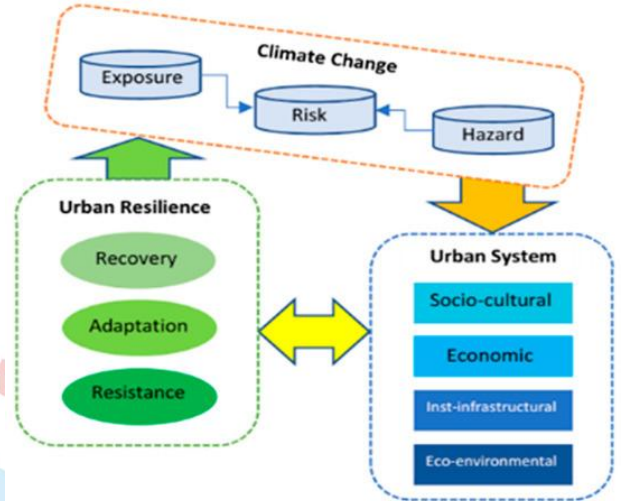
- **श्रीलंका:** चक्रवात 'दितवाह' से बाढ़ और भूस्खलन हुआ, जिसमें कोलंबो और पहाड़ी कस्बों में 400 से अधिक लोगों की जान गई और हज़ारों विस्थापित हुए।
- **इंडोनेशिया:** चक्रवाती तूफानों ने सुमात्रा में व्यापक बाढ़ और भूस्खलन को जन्म दिया।
- **थाईलैंड (हट याई):** सदियों की सबसे भारी वर्षा ने शहर को जलमग्न कर दिया; प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियाँ विफल रहीं।
- **फिलीपींस (सेबू एवं विसायस):** टाइफून कालमेगी के कारण निचले इलाके जलमग्न हो गए, जिससे दर्जनों मौतें हुई और लाखों लोग विस्थापित हुए।

सेबू, हट याई और कोलंबो के पहाड़ी कस्बों जैसे कई असुरक्षित माध्यमिक शहर (Secondary Cities) वैश्विक मूल्यांकन में शामिल नहीं होते, जो एक बड़ा अज्ञात क्षेत्र (Blind Spot) दर्शाता है।

मौजूदा जीवन-क्षमता सूचकांकों में कमियाँ

1. सौंदर्य और आर्थिक मापदंडों पर अत्यधिक जोर

सूचकांक अस्पताल, स्कूल, पार्क, रोज़गार और नवाचार को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन जल निकासी क्षमता, ढलान स्थिरता, पारिस्थितिक बफर और अनौपचारिक बस्तियों की सुरक्षा को अनदेखा करते हैं। एक शहर उत्तम रैंक प्राप्त कर सकता है, फिर भी 300 मिमी बारिश होने पर उसकी तूफानी जल प्रणाली (stormwater system) ढह सकती है।



2. ज़मीनी स्तर की भेद्यता (Vulnerability) को समझने में विफलता

शहर-व्यापी औसत सामाजिक-आर्थिक असमानता को छिपाते हैं। धनी निवासियों के पास सुरक्षा सुनिश्चित करने के साधन होते हैं, जबकि परी-शहरी (Peri-urban) क्षेत्रों के निवासी ऐसी संरचनाओं में रहते हैं जो आपदा में सबसे पहले ढह जाती हैं—भले ही वह शहर "जीवन-क्षम" सूचीबद्ध हो। इस प्रकार, जोखिम का गलत मूल्यांकन होता है और यह सबसे कमज़ोर वर्गों पर स्थानांतरित हो जाता है।

3. असमान वित्तीयन (Funding) पैटर्न को सुदृढ़ करना

जलवायु अनुकूलन के लिए आवश्यक धन अक्सर उन्हीं धनी महानगरों को मिलता है जिनके पास प्रशासनिक क्षमता और मास्टर प्लान होते हैं। वहीं, छोटे शहरों, परी-शहरी बेल्टों और पहाड़ी बस्तियों—जो अक्सर अधिक आपदा-प्रवण होते हैं—को सीमित समर्थन प्राप्त होता है।

4. शहरी शासन की विकृत प्राथमिकताएँ

वैश्विक रैंकिंग सरकार को हवाई अड्डों, मेट्रो लाइनों और सैरगाहों जैसे चकाचौंध वाली परियोजनाओं (Glamour Projects) की ओर प्रेरित करती हैं। इससे नालियों की गाद निकालना (Desilting), पुलियों का उन्नयन, भवन संहिताओं का प्रवर्तन और जोखिम वाले क्षेत्रों से निवासियों का स्थानांतरण जैसे आवश्यक कार्यों से ध्यान हट जाता है।

असमानता और "आधुनिक" शहरों की अवधारणा

स्मार्ट और "सबसे जीवन-क्षम" शहरों का प्रचार एक झूठा सुरक्षा भाव पैदा करता है, जिससे गरीबों के लिए मौजूद वास्तविक जोखिम छिप जाते हैं। शहरी नियोजन संस्थाएँ इन सूचकांकों के पूर्वाग्रहों को अपनाकर जलवायु वास्तविकताओं के प्रति अंधेपन को संस्थागत (Institutionalising Blindness) बना रही हैं।

आगे की राह

1. **जलवायु-सहनीयता मापदंडों का एकीकरण:** सूचकांकों में जल निकासी क्षमता, बाढ़ के मैदानों पर अतिक्रमण, ढलान स्थिरता, अनौपचारिक बस्तियों की सुरक्षा और प्रभावी प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों को मापने का प्रावधान होना चाहिए।

2. **शहर-व्यापी से पड़ोस-स्तरीय डेटा की ओर बदलाव:** वास्तविक जोखिम को पकड़ने के लिए स्थानीयकृत भेद्यता आकलन का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. **निवेश को जोखिम न्यूनीकरण की ओर पुनर्निर्देशित करना:** अनुकूलन निधियों को भेद्य माध्यमिक शहरों, खतरा-मानचित्रण (Hazard-mapping) और जल निकासी उन्नयन को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि केवल बड़े बुनियादी ढाँचे पर खर्च करना चाहिए।
4. **शासन प्राथमिकताओं में सुधार:** पुलिसों के रखरखाव, भवन संहिताओं के प्रवर्तन, नहरों की बहाली और जोखिम वाले क्षेत्रों से स्थानांतरण को सच्ची आधुनिकता के प्रतीक के रूप में पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

IAS-PCS Institute

निष्कर्ष

शहरी आधुनिकता को केवल हवाई अड्डों, मेट्रो या व्यापार रैंकिंग से परिभाषित नहीं किया जा सकता। एशियाई बाढ़ यह प्रमाणित करती है कि एक वास्तव में जीवन-क्षम और समृद्ध शहर वह है जो अपने निवासियों—विशेषकर सबसे गरीब लोगों—को जलवायु चरम सीमाओं से बचाता है। जैसे-जैसे जलवायु व्यवधान तेज़ हो रहे हैं, भारत और विश्व को कॉस्मेटिक आधुनिकता (Cosmetic Modernity) के बजाय गहरी सहनशीलता (Deep Resilience) को प्राथमिकता देकर शहरी विकास की परिभाषा को पुनः निर्धारित करना होगा।

UPSC प्रीलिम्स प्रैक्टिस प्रश्न

प्रश्न: वैश्विक शहरी रहनेयोग्यता एवं लचीलापन सूचकांकों (global urban liveability and resilience indices) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. अधिकांश अंतरराष्ट्रीय रहनेयोग्यता सूचकांक शहर-स्तरीय औसतों पर आधारित होते हैं, जो अक्सर शहर के भीतर मौजूद असुरक्षित क्षेत्रों (intra-city vulnerabilities) को छिपा देते हैं।
2. UN-Habitat City Prosperity Index और Global Liveability Index जैसे वैश्विक सूचकांक शहरों की जलनिकासी क्षमता (drainage capacity) और ढलान स्थिरता (slope stability) को पर्याप्त रूप से मापते हैं।
3. जलवायु अनुकूलन वित्त (climate adaptation finance) का अधिकांश हिस्सा बड़े महानगरीय शहरों में जाता है क्योंकि उनके पास विस्तृत शहरी संकेतक (urban indicators) और मास्टर प्लान तैयार करने की संस्थागत क्षमता होती है।
4. द्वितीयक शहर (secondary cities) और परि-शहरी क्षेत्र (peri-urban settlements) जलवायु चरम स्थितियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होने के बावजूद अक्सर वैश्विक शहरी प्रदर्शन रैंकिंग में शामिल नहीं होते हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (A) केवल एक
- (B) केवल दो
- (C) केवल तीन
- (D) सभी चार

सही उत्तर: (C) केवल तीन



UPSC Mains Practice Question-

प्रश्न: “वैश्विक शहरी रहनेयोग्यता सूचकांक (Global Urban Liveability Indices) अक्सर जलवायु चरम स्थितियों (climate extremes) के प्रति शहरों की वास्तविक लचीलापन क्षमता को दर्शाने में विफल होते हैं।” एशिया में हाल ही में आए बाढ़ के संदर्भ में इस कथन की समालोचनात्मक परीक्षा कीजिए। साथ ही, शहरी रैंकिंग को अधिक जलवायु-सहिष्णु (climate-resilient) और समावेशी बनाने के लिए उपाय सुझाइए। (150–200 शब्द)

IAS-PCS Institute



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806



www.resultmitra.com